COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 15, Issue No: 2, Year: 2024 (July-December)
PP: 91-95
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

महिलाओं के सशक्तिकरण में गृह-विज्ञान की भूमिका

नंदनी कुमारी
शोधार्थी
गृह विज्ञान विभाग ल॰ ना॰ मि॰ विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा (बिहार)

सार– एक महिला परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है, जो समाज की मूल इकाई है। गृह विज्ञान प्रशिक्षण, एक महिला को शारीरिक, भावनात्मक, आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन है। सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक महिला में चुनाव करने, संसाधनों पर नियंत्रण रखने या निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। एक सशक्त महिला अपने स्वयं को विकास की सूत्रधार बन सकती है, वह अपनी पसंद को अनुसार अपना निर्णय(फैसला) तय कर सकती है, और समाज मे अपनी अधीन स्थिति को चुनौती देने तथा उसे बदलने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम और सशक्त हो सकती है। गृह-विज्ञान प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद करेगा, ताकि वे आज के तकनीकी युग की चुनौतियों का सामना कर सकें। गृह-विज्ञान प्रशिक्षण न केवल एक महिला को शिक्षित करता है, बल्कि उसे अपने घर और बाहरी दुनिया, दोनों जगहों पर निर्णय लेने और जिम्मेदारियों को स्वीकार करने में भी सक्षम बनाता है। पूरे विश्व मे, महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाने के आंदोलन ने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि शिक्षा ही सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। महिलाओं के विकास के लिए दी जाने वाली शिक्षा में आत्मनिर्भरता, व्यक्तिगत विकास, सामाजिक विकास, उत्पादक क्षमता, सामाजिक एकीकरण और राजनीतिक समझ जैसे विषयों को शामिल किया जाना चाहिए। गृह-विज्ञान प्रशिक्षण, ऊपर बताई गई इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करने का एक आदर्श माध्यम है। गृह विज्ञान प्रशिक्षण को केवल लड़कियों को इस उद्देश्य से शिक्षित करने के लिए विकसित नहीं किया गया है कि वे महज एक डिग्री प्राप्त कर लें, जिसे अक्सर विवाह के लिए एक 'पासपोर्ट' माना जाता है- बल्कि इसे व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक, सभी दृष्टियों से महिलाओं का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए तैयार किया गया है। गृह विज्ञान प्रशिक्षण महिलाओं को सशक्तिकरण में योगदान देने वाले विभिन्न कारकों तक पूर्ण और समान पहुँच तथा उन पर नियंत्रण प्रदान करता है। विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, सूचना आत्म-विकास हेतु आजीवन सीखने के अवसर, व्यावसायिक कौशल, रोजगार और आय-अर्जन के अवसर, तकनीकी सेवाएँ विरासत और विवाह संबंधी अधिकार, साझा संसाधन, ऋण सुविधाएँ प्रौद्योगिकी प्रसार जनसंचार माध्यम, परिवार नियोजन, महिलाओं के अधिकार आदि। गृह विज्ञान प्रशिक्षण ने यह सिद्ध कर दिया कि एक महिला घर परिवार की देखभाल करने वाली, गृहणी होने के साथ-साथ एक शिक्षिका, शोधकर्ता, उद्यमी और प्रशासक की भूमिका भी बखूबी निभा सकती है। अतः यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की असीम संभावनाओं को न केवल उजागर करता है, बल्कि उन्हें साकार करने का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

मूल बिन्दु– सशक्तिकरण, महिलाएँ, शिक्षा गृह-विज्ञान, विकास, प्रशिक्षण, अधिकार आदि।

परिचय–

शिक्षा महिला सशक्तिकरण के लिए प्रथम एवं मूलभूत साधन है। यह माना जाता है कि शिक्षा वह शास्त्र है जिससे महिला को समाज में अपनी सही जगह मिल सकती है। एक शिक्षित महिला से पूरा परिवार एवं आने वाली पीढ़ी का विकास संभव है। महिला को शिक्षा से उसके शोषण रोकने में सहायता मिलेगी। शिक्षा जीवन के दरवाजे की वह कुंजी है जिसका लक्ष्य ज्ञान रूपी प्रकाश को फैलाना तथा अज्ञान रूपी अंधेरे को दूर करना है। महिला को शिक्षित होने से राष्ट्र आर्थिक रूप से लाभान्वित होगा।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

एक महिला को शिक्षित करने का अर्थ है एक परिवार को शिक्षित करना। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था, यदि आप एक आदमी को शिक्षित करते है तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, अगर आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं। 'जब लगभग आधी आबादी का योगदान करने वाली महिलाओं को सशक्त किया जाएगा तो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करना होगा। क्योंकि ये सभी चुनौतियों का जवाब देने, अपनी पारंपरिक भूमिका का सामना करने और परिवर्तन करने में सक्षम बनाता हैं। भारत और लगभग सभी देशों में महिलाओं के प्रति भेदभाव अभी भी कायम है। साक्षरता दर 2011 की जनगणना के अनुसार 65.46 प्रतिशत है जहाँ पुरुष साक्षरता दर 80 प्रतिशत से अधिक है। समाज के लिए महिला का स्वस्थ, शिक्षित, समझदार कुशल व्यवहार, बुद्धिमान होना जरूरी है और यह शिक्षा से ही संभव है। जब महिला की स्वयं की स्थिति सामाजिक आर्थिक राजनैतिक शैक्षिक आदि दृष्टिकोण से निम्न होगी तो वह परिवार समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे पायेंगी। महिलाओं की शिक्षा को बदलने का सबसे सशक्त माध्यम है। महिला सशक्तिकरण में गृह विज्ञान शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो महिलाओं की स्वास्थ्य, पोषण, संसाधन प्रबंधन और व्यावसायिक कौशल के माध्यम से से आत्मनिर्भर बनाती है। यह शिक्षा न केवल घर प्रबंधन में सुधार करती है बल्कि महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र, जागरूक और निर्णय लेने में सक्षम बनाकर सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है।

महिला सशक्तिकरण में गृह विज्ञान की प्रमुख भूमिका–

i) **आर्थिक आत्मनिर्भरता और कौशल विकास–** गृह विज्ञान के तहत सिलाई, कढ़ाई, खाद्य संरक्षण (Food Preservation) बैकिंग और आंतरिक सजावट जैसे कोर्स सिखाए जाते हैं। ये कौशल महिलाओं को अपना छोटा व्यवसाय शुरू करने और आय अर्जित करने में मदद करते हैं।

ii) **स्वास्थ्य और पोषण का ज्ञान–** यह विषय पोषण, शिशु देखभाल, और स्वच्छता के बारे में वैज्ञानिक समझ प्रदान करता है, जिससे महिलाएँ परिवार के स्वास्थ्य को बेहतर बना सकती हैं और स्वास्थ्य देखभाल लागत में कमी ला सकती हैं।

iii) **संसाधन और समय का प्रबंधन–** गृह विज्ञान सिखाता है कि सीमित संसाधनों (समय, धन, ऊर्जा) का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जाए। यह प्रबंधन कौशल महिलाओं को घर और कार्य-स्थल के बीच संतुलन बनाने में मदद करता है।

iv) **निर्णय लेने की क्षमता–** शिक्षा के माध्यम से महिलाए आत्मविश्वास विकसित करती हैं और अपने परिवार स्वास्थ्य, और भविष्य के बारे में निर्णय लेने में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

v) **तकनीकी साक्षरता–** यह महिलाओं को आधुनिक घरेलू उपकरणों और तकनीकों के इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षित करता है, जिससे वे तकनीकी युग की चुनौतियों का सामना कर सकें।

vi) **बाल विकास और संस्कार–** गृह विज्ञान में बाल विकास का अध्ययन महिलाओं को बच्चों की सही परवरिश और शिक्षा के बारे में जानकारी देता है, इससे स्वस्थ और संस्कारी समाज का निर्माण होता है।

ग्रामीण महिलाओं के विकास में गृह–विज्ञान का महत्त्व–

ग्रामीण क्षेत्रों में गृह विज्ञान का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। यह महिलाओं को स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके रोजगार प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। स्वयं सहायता समूहों (Self Help Groups) के माध्यम से महिलाएं अचार, पापड़, मसाले, हस्तशिल्प, पेंटिंग और कपड़ों का उत्पादन करके अपनी आय बढ़ा रही हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

आधुनिक समय में गृह विज्ञान का महत्व–

आज के समय में गृह विज्ञान केवल घरेलू विषय नहीं रहा। यह रोजगार और करियर का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। गृह विज्ञान के विद्यार्थी, शोधकर्ता निम्न क्षेत्रों में कार्य कर सकते हैं।

1. फैशन डिजाइनर
2. न्यूट्रिशनिस्ट
3. फूड टेक्नोलॉजिस्ट
4. शिक्षण एवं प्रोफेसर
5. इंटीरियर डिजाइनर
6. चाइल्ड डेवलपमेंट विशेषज्ञ
7. होटल एवं कैटरिंग उद्योग।

इससे महिलाओं के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। भारत में कई महिलाओं ने कौशल और शिक्षा के माध्यम से सफलता प्राप्त की हैं। इला भट्ट ने महिलाओं को स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित किया। सेवा जैसी संस्थाओं ने लाखों महिलाओं को प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर प्रदान किए। इन प्रयासों ने महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उद्देश्य–

i) गृह विज्ञान शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण सुनिश्चित करना।

ii) महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता विकसित करना।

iii) महिलाओं के लिए सामाजिक कुरीतियों को कम करना।

शिक्षा और सशक्तिकरण में सहसंबंध–

प्रस्तुत अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है की शिक्षा और सशक्तिकरण में क्या सहसंबंध है। शिक्षा महिला को रूढ़िवादी परंपरा को चुनौती देने में मदद करती है। शिक्षा की प्रतिक्रिया सीधे महिला सशक्तिकरण में देखने को मिलती है। शिक्षा के बिना महिला सशक्तिकरण एक कल्पना सा प्रतीत होता है, इसलिए महिला सशक्तिकरण हेतु महिलाओं को शिक्षित होना चाहिए।

भारत में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का महत्व–

i) शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाती है। शिक्षित लड़कियों और युवतियों को जानने की संभावना अधिक होती है, उनके अधिकारों और उन पर दावा करने का विश्वास रखने के लिए।

ii) शिक्षा समानता नौकरी के अवसरों में सुधार करती है और आर्थिक विकास को बढ़ाती है यदि सभी बच्चों की शिक्षा तक समान पहुँच थी, उत्पादकता लाभ से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

iii) शिक्षा सहिष्णुता को बढ़ावा देती है शिक्षा लोगों को लोकतंत्र को समझने में मदद करती है, सहिष्णुता और विश्वास को बढ़ावा देता है जो इसे रेखांकित करता है, और लोगों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करता है उनके समाज का राजनीतिक जीवन।

iv) महिलाओं को शिक्षित करने से कम उम्र में विवाह से बचा जाता है— यदि अधिक संख्या में शिक्षा प्रदान की जाती है, महिलाओं को बाल विवाह से बचने में मदद मिलेगी।

पुरुष और स्त्री समाज के एक सिक्के के दो पहलू है तो फिर शिक्षा भी एक समान प्राप्त होनी चाहिए। जिस तरह पुरुष शैक्षिक जीवन इस समाज के विकास के लिए आवश्यक है किसी भी तरह की नकारात्मक सोच इस समाज के विकास का रोड़ा बन सकता है। आज के युग में स्त्री पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है। हर एक क्षेत्र स्त्री आज कुशल है, वह घर की देखभाल के साथ–साथ

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में अडिग है। स्त्री किसी भी समाज की भावी माँ होती है। शिक्षा स्त्री को जीवन कुशल, अच्छे स्वस्थ और ज्ञान जैसे मुद्दों पर चर्चा करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्थान है।

स्त्री शिक्षा से आने वाले बदलाव–

अगर हमारी आबादी पुरुषों पर निर्भर है तो विकास का कोई साधन नहीं है। महिलाओं को शिक्षित आर्थिक स्वतंत्रता आएगी और इससे सशक्तिकरण संभव हो पा रहा है। इससे एक सुधरा हुआ जीवन मिल पाना संभव हो रहा है। स्त्री की शिक्षा एक अच्छे जीवन के सुधार में मदद करती है। स्त्री के साथ परेशानी इसलिए आती है क्योंकि उन्हें अपने अधिकारों का पता नहीं होता है। शिक्षा के माध्यम से स्त्री को उनके अधिकारों का पता चलता है इससे उनकी मुसीबतें कम होती है। शिक्षा के माध्यम से वह बेहतर स्वस्थ विकल्पों के बारे में जान सकेगी। स्वस्थ जीवन शैली से वह कुशल जीवन का नेतृत्व करती है। एक सशक्त महिला उन हजारों लड़कियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन सकती है जो उन्हें अपना आदर्श बना सकती है। महिला शिक्षा के मार्ग में बाधाएँ भारतीय समाज पुरुष प्रधान है। महिलाओं को पुरुषों के बराबर सामाजिक दर्जा नहीं दिया जाता है और उन्हें घर की चहारदीवारी तक सीमित कर दिया जाता है। हाँलाकि ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में स्थिति अच्छी है, परंतु इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि आज भी देश की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है।

जिस रफ्तार से भारत में आर्थिक प्रगति हो रही है, उस अनुपात में शिक्षा के मामले में देश अपेक्षित तरक्की नहीं कर पाया है। देश में 61 लाख ऐसे बच्चे हैं जो शिक्षा से वंचित हैं। खासतौर पर बालिका शिक्षा की स्थिति चिंताजनक है। सैम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम बेसलाइन सर्वे 2014 की रिपोर्ट के अनुसार 15 से 17 साल की लगभग 16 प्रतिशत लड़कियाँ स्कूल बीच में ही छोड़ देती हैं। इसका मतलब यह है कि राज्य 26.6 प्रतिशत लड़कियाँ किसी न किसी कारण से स्कूल छोड़ देती हैं। 26.6 प्रतिशत लड़कियाँ 9वीं और 10वीं कक्षा तक भी नहीं पहुँच पाती हैं। छत्तीसगढ़ में 15 से 17 साल की 90.1 प्रतिशत लड़कियाँ स्कूल जा रही हैं। जबकि असम में यह आंकड़ा 83.3 प्रतिशत है। झारखंड में 84.1 प्रतिशत, मध्यप्रदेश में 79.2 प्रतिशत, यूपी में 79.4 प्रतिशत और उड़ीसा में 75.3 % लड़कियाँ हाई स्कूल के पहले ही स्कूल छोड़ देती हैं। गरीबी के कारण लोग सोचते हैं कि जितनी खर्च वो बेटी को पढ़ाई में लगाएंगे उतने में उनकी शादी कर दी जाएगी। घर से स्कूल की दूरी ज्यादा होने के कारण भी लोग वहां लड़कियों को नहीं भेजना चाहते। अगर उच्च शिक्षा के लिए लड़कियाँ बाहर जाना भी चाहती हैं तो उन्हें कह रहेगी कैसा माहौल होगा यह कह कर टाल दिया जाता है। उनका समय घर के काम में खत्म हो जाता है।

सुझाव–

महिलाओं को शिक्षा के प्रति भेदभाव एक दिन में नहीं बदला जा सकता। अपनी स्थिती को सुधारने के लिए महिलाओं को अपने मार्ग में आने वाली बाधा को दूर करना होगा। कुछ महिला स्कूल एवं कॉलेज की संख्या बढ़ानी होगी। महिला शिक्षा से स्कूल की दूरी को कम करना होगा। जनता में महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता के लिए स्थानीय समाज सुधारकों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं की प्रभावशाली भूमिका हो सकती है। उन्हें प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। आवासीय कन्या पाठशाला भूमिका हो सकती है। उन्हें की अधिक से अधिक स्थापना करनी चाहिए। सरकार को निर्धन पिछड़े तथा कमजोर वर्गों की बालिका शिक्षा के प्रति उत्साह बढ़ाने के लिए ठोस कदम की आवश्यकता है।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते हैं कि महिलाओं के सशक्तिकरण में गृह विज्ञान की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह महिलाओं को केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं रखता। यह एक प्रभावी माध्यम है यह महिलाओं को शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य जागरूकता, आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मविश्वास

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

प्रदान करता है। आज आवश्यकता है कि गृह-विज्ञान शिक्षा को आधुनिक तकनीक और रोजगार से जोड़ा जाए ताकि अधिक से अधिक महिलाएँ इसका लाभ उठा सकें। और आज आवश्यकता है कि गृह-विज्ञान शिक्षा को अधिक बढ़ावा दिया जाए ताकि महिलाएँ आत्मनिर्भर बन सकें और समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें। जब महिलाएँ सशक्त होंगी, तभी परिवार मजबूत होगा, समाज विकसित होगा और समृद्ध विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव होगा।

संदर्भ सूची–

1) शर्मा डॉ. बी. डी. (2016), स्वास्थ्य जागरूकता तथा शारीरिक विकास, प्रकाशक ओमेगा।
2) शिवकी डॉ. (2016), महिलाओं में गलत खान-पान और कुपोषण, प्रकाशक ए. जे. बुक्स।
3) शेरी डॉ. टी. पी., गृह व्यवस्था एवं गृह कला, प्रकाशक विनोद पुस्तक मंदिर।
4) व्यास डॉ. मिनाक्षी (2008), नारी चेतना और सामाजिक विधान, रोशनी पब्लिकेशन्स, कानपुर।
5) अंसारी एम. ए. (2001), महिला और मानवाधिकार, ज्योति प्रकाशन जयपुर।
6) खनुजा डॉ. रीना (2008), आहार एवं पोषण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
7) वर्मा डॉ. निर्मल (2019), स्वास्थ्य शिक्षा, प्रकाशक ओमेगा पब्लिकेशन्स।
8) शर्मा रमा एवं मिश्रा एम. वी. (2009), गृह विज्ञान विशकोष, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस।
9) महरोत्रा एम. (2017), महिला अधिकार और मानव अधिकार, ज्ञान गंगा, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 136-140।
10) दुबे प्रो. वी. के. (2011), गृह विज्ञान प्रसार एवं सम्प्रेषण, स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा।

© Copyright @ Authors